Power (शक्ति) - राजनीति विज्ञान के अध्ययन के अन्तर्गत यह आवश्यक हो जाता है कि हमारे द्वारा मानव के सार्वजनिक व्यवहार को निर्धारित करने वाले और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाले तत्वों का अध्ययन किया जाए और यदि यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया जाए तो इस सम्बन्ध में जो तत्व सबसे प्रमुख रूप में उभरकर हमारे सामने आता है, वह निश्चित रूप से शक्ति ही है। प्रारम्भिक काल से अब तक राजनीति विज्ञान विषय के विद्वानों द्वारा शक्ति के महत्व को स्वीकार किया जाता रहा है। भारत में राजनीति विज्ञान के जनक कौटिल्य ने 'दण्ड शक्ति' जो कि शक्ति का ही पर्याय है, को राजनीति का मूल आधार माना है। एक स्थान पर वे लिखते हैं कि "समस्त सांसारिक जीवन का मूल आधार दण्ड-शक्ति ही है।" पाश्चात्य राजनीति विज्ञान के अन्तर्गत भी यही बात देखी जा सकती है। बेकर के अनुसार, "राजनीति शक्ति से अपृथकनीय है" और कैटलिन ने राजनीति को 'शक्ति का विज्ञान' माना है। बर्ट्रेण्ड रसेल ने तो शक्ति को समाज विज्ञान की मूलभूत अवधारणा के रूप में माना है और एम. एस. ओलमर के कथनानुसार, "सभी सामाजिक विज्ञानों में शक्ति की धारणा से इतना सम्बन्धित कोई भी नहीं है जितना कि राजनीति विज्ञान है।

अरस्तु से लेकर आज तक के राजनीतिक लेखकों की विषय वस्तु का विश्लेषण करने पर यह निस्सन्देह स्पष्ट हो जाता है कि शक्ति इसमें एक केन्द्रीय धारणा रही, जिसके सहारे राजनीति विज्ञान को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया।

राजनीति विज्ञान में शक्ति की धारणा को समझना इसलिए भी आवश्यक हो जाता है कि इस सम्बन्ध में जो मिथ्या विचार प्रचलित हैं, उन्हें दूर किया जा सके। लॉर्ड एक्टन का प्रसिद्ध कथन कि "शक्ति भ्रष्ट करती है और पूर्ण शक्ति पूर्णतया भ्रष्ट कर देती है", हमारे मन और मस्तिष्क में शक्ति के प्रति एक दुर्भावना को जन्म देता है। वस्तुस्थिति यह है कि शक्ति जो सामाजिक व्यवस्था के लिए नितान्त आवश्यक है और शक्ति के बिना किसी प्रकार की सामाजिक

Scanned with CamScanner

व्यवस्था की कल्पना नहीं की जा सकती, केवल शक्ति की अति या शक्ति के दुरुपयोग के साथ ही अत्याचार को जोड़ा जा सकता है। इसी प्रकार एक नैतिक धारणा के रूप में 'सत्यमेव जयते' नितान्त औचित्यपूर्ण विचार है और मानवीय जीवन में हमारा आदर्श यही होना चाहिए, लेकिन वस्तुस्थिति यह है कि सत्य के पीछे शक्ति का बल होने पर ही उसकी विजय की आशा की जा सकती है। अतः यथार्थवादी दृष्टिकोण से सत्य और शक्ति एक-दूसरे के विरोधी नहीं, वरन् पूरक हैं और पास्कल ने इस आधार पर ही न्याय और शक्ति के संयोजन की आवश्यकता के विषय में अपने विचार व्यक्त किए हैं।

Scanned with CamScanner